रीतिकाल की प्रसिद्ध पंक्तियाँ एवं कथन

- 'वास्तव में श्रृंगार और वीर इन्हीं दो रसों की कविता इस काल में हुई। प्रधानता श्रृंगार की रही। इससे इस काल को रस के विचार से कोई श्रृंगार काल कहे तो कह सकता है।' ~ आचार्य शुक्ल

- रीतिकाल का वर्गीकरण मुक्तरीति और बद्धरीति। बद्धरीति के दो भाग रीति चेतस् और काव्य चेतस्। मुक्त रीति के दो भाग क्लासिकल और स्वच्छंद। किसने माना है? - डॉ0 बच्चन सिंह।

- 'वाग्धारा बंधी हुई नालियों में ही प्रवाहित होने लगी जिससे अनुभव के बहुत से गोचर और अगोचर विषय रससिक्त होकर सामने आने से रह गए ।' रीतिकाल के संदर्भ में- आचार्य शुक्ल

- 'इनकी भाषा में वह अनेकरूपता है जो एक बड़े कवि में होनी चाहिए। भाषा की ऐसी अनेकरूपता गोस्वामी तुलसीदासजी में दिखाई देती है।' — पद्माकर के संदर्भ में यह —आचार्य शुक्ल

- ‘श्रृंगार रस के ग्रंथों में जितनी ख्याति और जितना मान 'बिहारी सतसई' का हुआ उतना और किसी का नहीं। इसका एक एक दोहा हिंदी साहित्य में एक एक रत्न माना जाता है। ' —आचार्य शुक्ल
- जिस कवि में कल्पना की समाहार शक्ति के साथ भाषा की समाहार शक्ति जितनी अधिक होगी उतनी ही वह मुक्तक की रचना में सफल होगा। यह क्षमता बिहारी में पूर्ण रूप से वर्तमान थी ।' —आचार्य शुक्ल
- 'जो हृदय के अंतस्तल पर मार्मिक प्रभाव चाहते हैं, किसी भाव की स्वच्छ निर्मल धारा में कुछ देर अपना मन मग्न रखना चाहते हैं, उनका संतोष बिहारी से

नहीं हो सकता। बिहारी का काव्य हृदय में किसी ऐसे लय या संगीत का संचार नहीं करता जिसकी स्वरधारा कुछ काल तक गूँजती रहे। —आचार्य शुक्ल

- भावों का बहुत उत्कृष्ट और उदात्त स्वरूप बिहारी में नहीं मिलता। कविता उनकी श्रृंगारी है, पर प्रेम की उच्चभूमि पर नहीं पहुँचती, नीचे ही रह जाती है।' — आचार्य शुक्ल

- केशव को कवि हृदय नहीं मिला था। उनमें वह सहृदयता और भावुकता भी न थी जो एक कवि में होनी चाहिए ।' - आचार्य शुक्ल

केशव केवल उक्तिवैचित्र्य और शब्दक्रीड़ा के प्रेमी थे। जीवन के नाना गंभीर और मार्मिक पक्षों पर उनकी दृष्टि नहीं थी।' - आचार्य शुक्ल

केशवदास की प्रसिद्ध पंक्तियाँ

(1) जदपि सुजाति सुलच्छनी, सुबरन सरस सुवृत्त।
भूषन बिनु न बिराजई, कविता बनिता मित्त ॥

(2) मातु, कहाँ नृप तात ? गए सुरलोकहिं क्यों ? सुत शोक गए।

(3) किधौ मुनिशाप हत, किधौं ब्रह्म दोष रत, किधौं कोऊ ठग हौ।'

(4) देखे मुख भावै, अनदेखेई कमल चंद्र,

ताते मुख मुखै, सखी, कमलौ न चंद री॥

(5) केशव केशवराय मनौ कमलासन के सिर ऊपरे सोहै ।

(6) बासर की संपति उलूक ज्यों न चितवत ।

(7) जैसियै सिखाओ सीख तुमहीं सुजानप्रिय,

तुमहिं चलत मोहिं जैसो कछु कहनो ॥

(8) अरुण गात अति प्रात पद्मिनी प्राननाथ भय ।

(9) केसव केसनि अस करी बैरिहु जस न कराहिं।

चंद्रबदनि मृगलोचनी 'बाबा' कहि कहि जाहिं ।।

(10) भाषा बोलि न जानई जेहिं कुल के दास ।

'छहरैं सिर पै छवि मोरपखा, उनकी नाथ के मुकुता धहरें।

फहरै पियरो पट बेनी इतै, उनकी चुनरी के झबा झहरें ।। -बेनी वाजपेयी

'करि की चुराई चाल सिंह की चुराई लंक,

ससि को चुरायो मुख नासा चोरी कीर की।

पिक को चुरायो बैन मृग को चुरायौ नैन;

दसन अनार हांसी गूजरी गंभीर की।' –बेनी वाजपेयी

'भली आजु कलि करत हौ, छत्रसाल महाराज।

जहँ भगवत गीता पढ़ी, वहँ कवि पढ़त नेवाज।।' – नेवाज

'दिया है खुदा ने खूब खुसी करो ग्वाल कवि,

खाव पियो, देब लेब, यहीं रह जाना है।' –ग्वाल कवि

- 'पल अंजुरित सों पियत दूंग, जल असुवां भरि सांस ।

गनित रहित है अवधि के दिन पखवारे मास ।।' –रसनिधि

- देह दही बेचत दही, दई दई यह जाति

  गोरस मिस गोरसहिं, हरि, मग मंडराति डराति ।।' – वृंद

- 'भले बुरे सब एक सम, जौ लौं बोलत नाहिं ।

  जान परत हैं काग पिक, ऋतु बसंत के मांहि ।।' –वृंद

- 'छबि सो फबि सीस किरीट बन्यो , रुचि साल हिये बनमाल लसै ।'— कृष्ण कवि

- 'इनकी सी विशुद्ध, सरस और शक्तिशालिनी ब्रजभाषा लिखने में और कोई कवि समर्थ नहीं हुआ। विशुद्धता के साथ प्रौढ़ता और माधुर्य भी अपूर्व है ।' घनानंद के संदर्भ में – आचार्य शुक्ल

- 'सहज सेत पंचतोरिया, पहिरत अति छवि होति ।
  जल चादर के दीप लौं जगमगाति तन ज्योति।।' – बिहारी

- लहि रति सुख लगियै गरें लखी लजौहीं नीठि ।
  खुलत न मो मन बांधि रही वह अधखुली दीठि ।।' – बिहारी

- रीतिकाल के किस कवि को आचार्य शुक्ल ने 'लाक्षणिक मूर्तिमत्ता' और 'प्रयोग वैचित्र्य' का ऐसा कवि कहा जैसे कवि उनके पौने दो सौ वर्ष बाद छायावाद काल में प्रकट हुए? - घनानंद
- 'कटि को कंचन काटि बिधि कुचन मध्य धरि दीन' - रंगरेजिन (शेख)
- अद्भुत गति यहि प्रेम की, बैनन कही न जाय।
  दरस भूख लागै दृगन भूखहिं देत भगाय।।' -रसनिधि
- 'जहाँ कलह तहँ सुख नहीं, कलह सुखन को सूल।
  सबै कलह इक राज में, राज कलह को मूल ।।' - नागरीदास

- निकट रहे आदर घंटे, दूरि रहे दुख हाये ।

  सम्मन या संसार में, प्रोति करौं जनि कोय।।' –सम्मन

- जो चहै सुख देह को, तौ छांड़ौं ये चारि।

  चोरी, चुगली, जामिनी और पराई नारि ।।

  मीठी बात सो होत सबै सुख पूर।

  जेहि नहिं सीखो बोलिबो, तेहि सीखो सब धूर ।। –सम्मन

- किस रीतिमुक्त कवि के संदर्भ में यह प्रसिद्ध है - कि उसने सामंत हिम्मतबहादुर से अपमानित होने पर उनकी सभा में ही म्यान से तलवार निकाल लिया था ? - ठाकुर
- 'फीको पै नीके लगे, कहिए समय बिचारि ।
  सबको मन हरषित करै, ज्यों विवाह में गारि ।।' - वृंद
- बाम्हन सो मरि जाय, हाथ लै मदिरा प्यावै ।
  पूत वही मरि जाय, जो कुल में दाग लगावै ।।' बैताल

वृंद की प्रसिद्ध सूक्तियाँ

(1) रस अनरस समझै न कछु, पढ़ें प्रेम की गाथ।
वीछू मंत्र न जानई, सांप पिटारे हाथ ॥

(2) कैसे निबहै निबल जन करि सबलन सो गैर ।
जैसे बसि सागर बिषै करत मगर सों बैर ॥

(3) अपनी पहुँच बिचारि कै करतब करिये दौर ।
तेते पाँव पसारिये जेती लाँबी सौर ॥

(4) अति हठ मत कर, हठ बढ़े, बात न करिहै कोय।

ज्यों ज्यों भीजै कामरी, त्यौं त्यौं भारी होय।

(5) बिन स्वारथ कैसे सहै, कोऊ करुए बैन।

लात खाय पुचकारियै, होय दुधारू धैन।।

गिरिधर कविराय की पंक्तियां

- 'साईं घोड़े आछतहि गदहन आयो राज',
- 'धन्य मुल्क यह देस, जहाँ के राजा कौवा।'
- लाठी में गुण बहुत हैं, सदा रखिए संग।

गहिरा नदि नारा जहाँ, तहाँ बचावै अंग ।।'

साई बेटा बाप के बिगरे भयो अकाज ।

हिरनाकुस अरू कंस को गयो दुहुन को राज॥'

'रहिए लटपट काटि दिन बरू घामहि में सोय ।

छाँह न बाकी बैठिए जो तरू पतरो होय ॥'

'समझे कविता घन आनंद की हिय आंखिन नेह की पीर तकी ।' घनानंद के संदर्भ

– ब्रजनाथ

- कोमल शब्द निबंत सुवृत्त । अलंकार मोहन चित्त ।

  काव्य सुपद्धति सोभा गहे। इनके बाहुपाश कवि गहे । । ' -केशवदास ('रामचंद्रिका' से)

- इसमें संदेह नहीं कि काव्यरीति का सम्यक् समावेश पहले पहल आचार्य केशव ने ही किया। पर हिंदी में रीति ग्रंथों की अविरल और अखंडित परंपरा का प्रवाह केशव की 'कविप्रिया' के प्रायः पचास वर्ष पीछे चला और वह भी एक भिन्न आदर्श को लेकर, केशव के आदर्श को लेकर नहीं।' - आचार्य शुक्ल

'नेही महा, ब्रजभाषा प्रबीन और सुंदरतानि के भेद को जानै ।
जोग बियोग की रीति मैं कोविद, भावना भेद सरूप को ठाने ॥
चाह के रंग में भीज्यौ हियो, बिछुरें मिले प्रीतम सांति न मानै।
भाषा प्रवीन, सुछंद सदा रहै, सो घनजी के कवित्त बखानै ।।
घनानंद के संदर्भ में ये पंक्तियाँ किसकी हैं? - ब्रजनाथ

आवत जाता। राजा के लोगा। मूरति धारी । मानहु भोगा ।।' - केशवदास

नाहीं नाही करै, थोरी मांगे सब देन कहै
मंगन को देख यह देत बार- बार है।' - सेनापति

94.कैतो करौ कोई, पैए करम लिखोई, तातें

दूसरी न होई, उर सोई ठहराइए।' - सेनापति

ताज बीबी की पंक्तियाँ

"सुनो दिलजानी! मेरे दिल की कहानी,
तेरे हाथ हूं बिकानी, बदनामी भी सहूंगी मैं।
देव-पूजा ठानी, तजे कलमा-कुरान, मैं
नमाज हूं भुलानी तेरे गुनन गहूंगी मैं।।
सांवला सलोना, सिरताज, सिर कुल्लेदार!
तेरे नेह-दाघ में निदाघ है दहूंगी मैं।
नन्द के कुमार! कुर्बान तेरी सूरत पर,
हूं तो मुगलानी, हिन्दुआनी है रहूंगी मैं।।

कलमा-कुरान छोड़ आई हूं तिहारे पास,
भाव में, भजन में मैं दिल को लगाऊंगी।
पाऊंगी विनोद भर-भर के सुबह-शाम,
गाऊंगी तिहारे गीत नेक न लजाऊंगी।।
खाऊंगी प्रसाद प्रभु-मंदिर में जाप-जाप,
माथे पे तिहारी पद-रज को चढ़ाऊंगी।
आशिक-दिवानी बन, श्याम-पद पूजि-पूजि,
प्रेम में पगानी राधिकी-सी बन जाऊंगी।।'